कलाशा समुदाय का नृवंशविज्ञान, सामाजिक-धार्मिक संरचना एवं लोक नृत्य: हिंदूकुश की सांस्कृतिक विरासत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भौगोलिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत खैबर पख्तूनख्वा के चित्राल जिले में स्थित हिंदूकुश पर्वतमाला की संकीर्ण और दुर्गम घाटियों में कलाशा समुदाय निवास करता है। यह समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, अद्वितीय भाषा और प्रागैतिहासिक बहुदेववादी धार्मिक मान्यताओं के लिए जाना जाता है। कलाशा जनजाति मुख्य रूप से तीन प्रमुख पर्वतीय घाटियों में बसी हुई है, जिन्हें स्थानीय भाषा में बम्बुरेत ***(Mumuret)***, रुम्बुर ***(Rukmu)***, और बीरीर ***(Biriu)*** कहा जाता है। ये तीनों घाटियाँ चित्राल शहर के दक्षिण में चित्राल नदी के निचले प्रवाह की ओर खुलती हैं।

तीनों घाटियों का सामाजिक-आर्थिक ताना-बाना और सांस्कृतिक संरक्षण का स्तर भिन्न-भिन्न है। बम्बुरेत सबसे विशाल और सर्वाधिक आबादी वाली घाटी है, जहाँ आधुनिक बुनियादी ढाँचे और बाह्य पर्यटन का प्रभाव सबसे अधिक देखा गया है।

रुम्बुर घाटी बम्बुरेत के उत्तर में स्थित है और यहाँ पारंपरिक कलाशा रीति-रिवाजों का अधिक सघन एवं मौलिक रूप में पालन किया जाता है। बीरीर घाटी दक्षिण में अधिक संकीर्ण और भौगोलिक रूप से अलग-थलग होने के कारण कलाशा दस्तूर यानी पारंपरिक जीवन शैली के प्राचीनतम और रूढ़िवादी तत्वों को संजोए हुए है।

घाटी का नाम	भौगोलिक स्थिति एवं आकार	मुख्य धार्मिक व अनुष्ठानिक केंद्र	पर्यटन एवं आधुनिक प्रभाव का स्तर
बम्बूरेत ***(Bumburet)***	सबसे बड़ी और अत्यधिक आबादी वाली घाटी	महंदेव वॉट ***(Mahandeo Dur)*** एवं कलाशा संग्रहालय	उच्च व्यावसायिकता, पर्यटकों की सुगम आवाजाही
रुम्बूर ***(Rumbur)***	बम्बुरेत के उत्तर में स्थित संकीर्ण घाटी	साजिगोर मंदिर ***(Sajigor Shrine)***	मध्यम प्रभाव, पारंपरिक रीति-रिवाजों का सुदृढ़ संरक्षण
बीरीर ***(Birir)***	दक्षिण में स्थित सबसे अलग-थलग घाटी	जेस्तक हान तथा 'पुल/प्रून' उत्सव स्थल	न्यूनतम पर्यटन, प्राचीनतम परंपराओं का निर्वहन

कलाशा उत्पत्ति के सिद्धांत, भाषाविज्ञान एवं जेनेटिक नृवंशशास्त्र

कलाशा समुदाय की ऐतिहासिक उत्पत्ति नृविज्ञानियों और जनसांख्यिकीय शोधकर्ताओं के बीच लंबे समय से बहस का विषय रही है। स्थानीय मौखिक परंपराओं और औपनिवेशिक काल के विवरणों में यह दावा किया जाता रहा है कि कलाशा लोग *327* ईसा पूर्व में भारत अभियान के दौरान सिकंदर महान के साथ आए मैसेडोनियाई और ग्रीक सैनिकों के प्रत्यक्ष वंशज हैं। हालांकि, आधुनिक जनसांख्यिकीय, भाषावैज्ञानिक और आनुवंशिक अनुसंधानों ने इस मैसेडोनियाई वंशज सिद्धांत को वैज्ञानिक आधार पर पूरी तरह से खारिज कर दिया है।

विभिन्न आनुवंशिक अध्ययनों के अनुसार कलाशा व्यक्तियों के पितृवंश ***(Y-DNA)*** और मातृवंश ***(mtDNA)*** में कोई विशिष्ट ग्रीक या यूरोपीय जेनेटिक सिग्नल नहीं पाया गया है। कलाशा जीनोम मुख्य रूप से दक्षिण और मध्य एशियाई आनुवंशिक घटकों से निर्मित है, जिसमें तीन प्राचीन वंशज शामिल हैं: प्राचीन दक्षिण एशियाई शिकारी-संग्राहक *(AASI)*, ईरानी नवपाषाण कृषक, और मध्य-उत्तर कांस्य युग की स्टेपी आबादी। कलाशा जीनोम में लगभग *37%* स्टेपी आनुवंशिक अंश विद्यमान है, जो इस पूरे हिंदूकुश क्षेत्र की अन्य आबादियों जैसे पश्तून, खो और नुरिस्तानी लोगों के समान ही एक साझा उत्तर-पश्चिमी सिग्नल है।

कलाशा समुदाय का बाह्य रूप से आनुवंशिक मानचित्र पर भिन्न दिखना किसी यूरोपीय उत्पत्ति का परिणाम नहीं है, बल्कि यह "आनुवंशिक विचलन" ***(Genetic Drift)*** और "जनसांख्यिकीय संकीर्णता" *(Genetic Bottleneck)* के कारण है। शताब्दियों तक हिंदूकुश की दुर्गम घाटियों में अत्यधिक एकांतवास और अंतर्विवाही *(Endogamous)*

विवाह प्रणाली का पालन करने के कारण इनकी प्रभावी जनसंख्या केवल *2,300* से *2,600* व्यक्तियों के बीच सीमित रह गई। इस दीर्घकालिक एकांतवास ने इनके डीएनए में एक निजी आनुवंशिक पहचान विकसित कर दी।

भाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से, कलाशा भाषा *(Kalasha-mun)* हिंद-आर्य भाषा परिवार की दर्दिक *(Dardic)* उपशाखा से संबंधित है, जो खोवार भाषा से निकटता से जुड़ी है। इसमें प्राचीन वैदिक संस्कृत और प्रोटो-हिंद-ईरानी भाषाई संरचनाएँ पाई जाती हैं, जो यह दर्शाती हैं कि कलाशा लोग स्थानीय लोह युग से ही इस क्षेत्र के स्वदेशी निवासी रहे हैं।

कलाशा धार्मिक दर्शन, सर्वदेवकुल एवं स्थानिक द्वैतवाद

कलाशा धर्म, जिसे स्थानीय रूप से 'कलाशा दस्तूर' कहा जाता है, हिंदूकुश क्षेत्र में जीवित अंतिम प्रागैतिहासिक, बहुदेववादी और जीववादी धर्मों में से एक है। यद्यपि पड़ोसी इस्लामी समाजों के संपर्क के कारण हाल के वर्षों में एक सर्वोच्च ईश्वर की अवधारणा को भी स्वीकार किया जाने लगा है, फिर भी इनका पारंपरिक धार्मिक ढाँचा ऋग्वैदिक और प्रोटो-हिंद-ईरानी धार्मिक पद्धतियों से गहरा साम्य रखता है।

कलाशा ब्रह्मांड विज्ञान में सर्वोच्च निर्माता देवता 'देज़ाउ' *(Dezau* या *Khodai)* हैं, जिन्होंने संपूर्ण सृष्टि की रचना की। देज़ाउ के अधीन कई प्रमुख देवी-देवता कार्य करते हैं, जिनमें 'महंदेव' *(*फसलों, युद्ध और मनुष्यों की प्रार्थनाओं को देज़ाउ तक पहुँचाने वाले मध्यस्थ देवता*)*, 'साजिगोर' *(*रुम्बुर घाटी में स्थित पशुधन और जनजातीय क्षेत्र के संरक्षक देवता*)*, 'जेस्तक' *(*गृह, परिवार और वंश की संरक्षिका देवी*)*, 'देज़ालिक' *(*महिलाओं, प्रसव और मातृत्व की रक्षा करने वाली देवी*)*, और 'बलुमैन' *(*शीतकालीन उत्सव चोइमुस के दौरान आगमन करने वाले दिव्य अतिथि देवता*)* शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उच्च पर्वतों पर निवास करने वाली परियों और आत्माओं जिन्हें 'सुची' और 'वेत्र' कहा जाता है, की भी व्यापक पूजा की जाती है।

कलाशा धर्म की दार्शनिक आधारशिला संपूर्ण सामाजिक और प्राकृतिक स्थान का दो भागों में विभाजन है*:* 'ओन्जेस्ता' *(Onjesta* - पवित्र/शुद्ध*)* और 'प्रगाता' *(Pragata* - अपवित्र/अशुद्ध*)*। उच्च पर्वतीय चरागाह, बकरियाँ, बांझ/ओक *(Holly-oak)* और देवदार के पेड़, पुरुष वर्ग तथा देवताओं के वेदी स्थल 'ओन्जेस्ता' की श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत, गाँव के निचले हिस्से, महिलाओं का मासिक धर्म और प्रसव काल 'प्रगाता' से संबद्ध माना जाता है। सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए ओन्जेस्ता और प्रगाता ऊर्जाओं को एक-दूसरे से पृथक रखना अनिवार्य माना जाता है।

पवित्र धार्मिक स्थल एवं वास्तुकला

कलाशा समाज में धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक जीवन विशेष रूप से निर्मित या चिन्हित वास्तुकला संरचनाओं के इर्द-गिर्द केंद्रित होते हैं। ये संरचनाएँ ओन्जेस्ता और प्रगाता के धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार वर्गीकृत की जाती हैं।

जस्ताखान *(Jastarkhan / Jestak Han)*

जस्ताखान देवी जेस्तक को समर्पित एक विशाल सामुदायिक हॉल या मंदिर होता है। इसकी वास्तुकला मुख्य रूप से नक्काशीदार लकड़ी के स्तंभों, चौखटों और एक केंद्रीय चूल्हे *(Hearth)* पर आधारित होती है। जस्ताखान कलाशा सामाजिक और धार्मिक जीवन का केंद्रीय स्तंभ है। यहाँ विवाह, नामकरण संस्कार *(Goshnik),* सामुदायिक भोज, शोक सभाएँ और वार्षिक उत्सवों के दौरान लोक नृत्य आयोजित किए जाते हैं। चूंकि देवी जेस्तक परिवार और गृहस्थी की संरक्षिका हैं, इसलिए जस्ताखान में पुरुषों और महिलाओं दोनों के प्रवेश की पूर्ण अनुमति होती है।

बाशाली *(Bashali)*

बाशाली प्रत्येक कलाशा गाँव के बाहरी हिस्से में निर्मित एक पृथक इमारत है, जिसे 'मासिक धर्म और प्रसव गृह' के रूप में जाना जाता है। कलाशा दस्तूर के अनुसार, शारीरिक रूप से मासिक धर्म या प्रसव अवस्था में महिलाएँ प्रगाता ऊर्जा से युक्त होती हैं, इसलिए वे गाँव और धार्मिक स्थानों की ओन्जेस्ता स्थिति को बनाए रखने के लिए इस अवधि में बाशाली में निवास करती हैं। बाशाली के भीतर केवल महिलाएँ और लड़कियाँ ही प्रवेश कर सकती हैं। इसके भीतर प्रसव की देवी 'देज़ालिक' की वेदी स्थापित होती है, जिसकी पूजा केवल महिलाएँ ही करती हैं। पुरुषों का बाशाली परिसर में प्रवेश पूरी तरह से वर्जित और धार्मिक अपराध माना जाता है।

खुले वेदी स्थल *(Open-air Altars)*

महंदेव ***(Mahandeo Dur)*** और साजिगोर ***(Sajigor Dur)*** जैसे मुख्य देवताओं के मंदिर किसी बंद इमारत में नहीं होते, बल्कि वे खुले आसमान के नीचे ओक और देवदार के विशाल पेड़ों के झुरमुट में पत्थर और लकड़ी की वेदियों के रूप में स्थित होते हैं। इन वेदियों के ऊपरी हिस्से पर लकड़ी से उकेरे गए घोड़े के सिर *(Horse heads)* स्थापित होते हैं। इन स्थानों को अत्यधिक ओन्जेस्ता *(*पवित्र*)* माना जाता है, इसलिए यहाँ महिलाओं का जाना पूरी तरह से प्रतिबंधित होता है और केवल पुरुष ही बकरों की बलि देकर पूजा-अर्चना संपन्न करते हैं।

यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची *(2018)* और 'सूर्यी जागेक'

नवंबर *2018* में यूनेस्को *(UNESCO)* ने कलाशा समुदाय की पारंपरिक खगोलीय और मौसम संबंधी प्रणाली 'सूर्यी जागेक' ***(Suri Jagek)*** को "अत्यंत आवश्यकता वाली अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची" *(List of Intangible Cultural Heritage in Need of Urgent Safeguarding)* में औपचारिक रूप से सूचीबद्ध किया।

'सूर्यी जागेक' *(*जिसका शाब्दिक अर्थ "सूर्य का अवलोकन" है*)* कलाशा समुदाय का एक प्राचीन ज्ञान अभ्यास है। यह अभ्यास स्थानीय पर्वतीय स्थलाकृति, पहाड़ों की चोटियों पर पड़ने वाली सूर्य की पहली किरणों, छाया की लंबाई, चंद्रमा की कलाओं और तारों की स्थिति के सूक्ष्म अवलोकन पर आधारित है। कलाशा समाज इस पारंपरिक खगोलीय गणना प्रणाली का उपयोग निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यों के लिए करता है*:*

1. बीज बोने, फसल काटने और बकरियों को उच्च पर्वतीय चरागाहों में ले जाने के सही समय का निर्धारण करना।

2. वार्षिक धार्मिक उत्सवों *(*जैसे चिलम जोशी, उचाल, चोइमुस*)* की सटीक तिथियों की गणना करना।

3. मौसम में होने वाले परिवर्तनों और प्राकृतिक आपदाओं का पूर्व अनुमान लगाना।

हेंदो प्रौद्योगिकीय प्रभावों, पर्यावरण में तेजी से आ रहे जलवायु परिवर्तनों और युवा पीढ़ी में इस ज्ञान के हस्तांतरण में कमी के कारण यह प्रणाली लुप्त होने के कगार पर पहुँच गई थी। इसके तत्काल संरक्षण, दस्तावेजीकरण और भावी पीढ़ियों तक हस्तांतरण को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यूनेस्को ने इसे वैश्विक अमूर्त विरासत का दर्जा प्रदान किया।

कलाशा लोक नृत्य, अनुष्ठानिक गायन एवं संगीत

कलाशा लोक नृत्य केवल एक मनोरंजक कला नहीं है, बल्कि यह उनकी धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक एकजुटता और प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का एक अनुष्ठानिक माध्यम है।

कलाशा नृत्य की सबसे प्रमुख शैली घेरा बनाकर झूमना *(Circle Dance)* है। इसमें कलाशा महिलाएँ और लड़कियाँ एक-दूसरे के हाथों में हाथ डालकर या एक-दूसरे के कंधों पर बांहें रखकर एक बड़ा, मजबूत और अनवरत घेरा बनाती हैं। इस घेरे में वे लयबद्ध कदमों से एक साथ आगे-पीछे और गोल घूमते हुए थिरकती हैं। नृत्य की गति का नियंत्रण अवनद्ध वाद्ययंत्रों जैसे ढोल *(Dhol)* और तिमकी *(Timki)* की थाप से होता है। नर्तक ढोल की धीमी और तेज होती थाप के अनुसार अपने शारीरिक संतुलन और कदमों की गति को बदलते हैं। नृत्य के साथ-साथ महिलाएँ पारंपरिक कलाशा भाषा में सामूहिक लोक गीत गाती हैं, जो उनके पूर्वजों की गाथाओं, प्राकृतिक सौंदर्य और देवताओं की स्तुति पर आधारित होते हैं।

कलाशा संस्कृति की एक अनूठी और अद्भुत परंपरा मृत्यु के समय किया जाने वाला 'मादमी नृत्य' *(Madmi Dance)* है। कलाशा समाज में जब किसी बुजुर्ग या प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो वे रोने और शोक मनाने के स्थान पर उनके जीवन की सफल यात्रा का जश्न मनाते हैं। मृतक के शव को जस्ताखान के बीच में रखा जाता है, और उसके चारों ओर पुरुष और महिलाएँ ढोल की तीव्र थाप पर एक साथ 'मादमी नृत्य' करते हैं। यह नृत्य इस विश्वास का प्रतीक है कि आत्मा ने एक सुखी सांसारिक जीवन पूरा करके देज़ाउ के दिव्य संसार की ओर प्रस्थान किया है।

पारंपरिक वेशभूषा एवं भौतिक संस्कृति

कलाशा लोक नृत्य अपनी अत्यंत जीवंत, भव्य और रंग-बिरंगी वेशभूषा के बिना अधूरा माना जाता है। यह वेशभूषा केवल सौंदर्य सौंदर्यशास्त्र का प्रतीक नहीं है, बल्कि कलाशा महिलाओं की सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक पहचान का मुख्य आधार है।

कलाशा महिलाएँ 'काली पोशाक' ***(Kalu Piran)*** पहनती हैं, जो हाथ से कढ़ी हुई काले सूती कपड़े की एक लंबी और ढीली पोशाक होती है। इस पोशाक के गले, आस्तीन और निचले घेरे पर लाल, पीले, हरे और नारंगी रंग के सूती व उनी धागों से जटिल ज्यामितीय पैटर्न और प्रकृति से प्रेरित बेल-बूटे उकेरे जाते हैं। महिलाओं का सबसे विशिष्ट आभूषण उनका पारंपरिक हेडगेयर है, जिसे दैनिक जीवन में 'शुशुत' ***(Shushut)*** और विशेष उत्सवों पर 'कपास' ***(Kupas)*** कहा जाता है। यह हेडगेयर कौड़ियों ***(Cowrie Shells)***, रंग-बिरंगे मोतियों, पीतल के बटनों, धातुओं और मोर के पंखों से सजा एक भारी और लंबा पट्टा होता है जो सिर से होकर पीठ की ओर लटकता है। इसके अतिरिक्त, महिलाएँ गले में कांच के मोतियों, मूँगों और कीमती पत्थरों की दर्जनों भारी मालाएँ धारण करती हैं।

घटक का नाम	प्रयुक्त सामग्री व सजावट	सांस्कृतिक एवं अनुष्ठानिक कार्य
काली पोशाक ***(Kalu Piran)***	काला सूती कपड़ा, रंगीन रेशमी/ऊनी धागे	कलाशा महिलाओं की दृश्य पहचान एवं दैनिक/उत्सव परिधान
हेडगेयर ***(Shushut / Kupas)***	कौड़ियाँ, मोती, बटन, तांबे के छल्ले, मोर पंख	सामाजिक प्रतिष्ठा, सौंदर्य तथा उत्सवों में नृत्य आभूषण
मोतियों की मालाएँ	रंगीन कांच, पत्थर, मूँगे और सीपियाँ	समृद्धि का प्रतीक एवं वेशभूषा का मुख्य पूरक अंग
ढोल एवं तिमकी ***(Percussion)***	नक्काशीदार लकड़ी और बकरी की खाल	उत्सवों में नृत्य की लय और गति का नियंत्रण वाद्य

मुख्य बड़े वार्षिक त्योहार एवं उत्सव स्थल

कलाशा समुदाय का संपूर्ण जीवन चक्र उनके तीन मुख्य वार्षिक त्योहारों के इर्द-गिर्द घूमता है। ये त्योहार मुख्य रूप से खुले मैदानों में आयोजित होते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पलावजाव' ***(Palawjaw)*** या 'रतनुत कुरिनी' ***(Ratnut Kurini)*** कहा जाता है।

चिलम जोशी ***(Chilam Joshi)***

मई के मध्य *(लगभग 13 से 16 मई)* में आयोजित होने वाला यह कलाशा समुदाय का सबसे बड़ा वसंत उत्सव है। यह सर्दियों की कठोरता की समाप्ति, नई फसलों के अंकुरण और वसंत ऋतु के आगमन की खुशी में मनाया जाता है। इस उत्सव का मुख्य अनुष्ठान 'गुलप्रिक' *(Gulprik)* है, जिसमें पिछले वर्ष जन्मे बच्चों को उच्च पर्वतीय स्थलों पर ले जाकर अनछुए दूध से छिड़काव करके समुदाय में औपचारिक रूप से शामिल किया जाता है। युवा महिलाएँ और पुरुष जंगलों से पीले फूल चुनकर लाते हैं, जिन्हें अपने शीर्षभूषणों में सजाकर खुले मैदानों में दिन-रात सामूहिक घेरा नृत्य किया जाता है।

उचाल उत्सव ***(Uchal)***

अगस्त के महीने में मनाया जाने वाला उचाल उत्सव ग्रीष्मकालीन फसल *(गेहूँ और जौ)* की कटाई की खुशी में आयोजित होता है। यह उत्सव मुख्य रूप से दूध, मक्खन और पनीर के प्रचुर उत्पादन के लिए देवताओं को धन्यवाद देने का अवसर होता है। चरवाहे उच्च पर्वतीय चरागाहों से ताजा मक्खन और पनीर लेकर गाँव में आते हैं। इन उत्पादों को महांदेव और साजिगोर की वेदियों पर समर्पित करने के पश्चात रात भर अलाव की रोशनी में मैदानों में उत्सव नृत्य होता है।

चोइमुस उत्सव ***(Choimus / Chawmos)***

दिसंबर के मध्य *(7 से 22 दिसंबर, शीतकालीन संक्रांति)* में मनाया जाने वाला यह उत्सव कलाशा समुदाय का सबसे महत्त्वपूर्ण धार्मिक और नए साल का त्योहार है। 'कुत्रामु' *(Kutramu)* अनुष्ठान के तहत गेहूँ के आटे से बकरियों और जंगली जानवरों की मूर्तियाँ *('शराबीरायक')* बनाई जाती हैं। 'चेत्तई अद्वआ' अनुष्ठान द्वारा देवता 'बलुमैन' का स्वागत किया जाता है और संपूर्ण समाज का प्रगाता स्थिति से ओन्जेस्ता स्थिति में शुद्धिकरण किया जाता है।

अत्यधिक ठंड के बावजूद, जस्ताखान और खुले मैदानों में विशाल अलाव ***(Bonfire)*** जलाकर उसके चारों ओर पारंपरिक नृत्य आयोजित किए जाते हैं।

त्योहार का नाम	आयोजन का समय	मुख्य धार्मिक व प्राकृतिक उद्देश्य	प्रमुख अनुष्ठान एवं नृत्य स्थल
चिलम जोशी ***(Chilam Joshi)***	मई के मध्य ***(13–16 मई)***	वसंत आगमन, नई फसलों का स्वागत	'गुलप्रिक' *(दूध छिड़काव)* अनुष्ठान, पलावजाव में नृत्य
उचाल ***(Uchal)***	अगस्त का उत्तरार्ध	फसल कटाई व दुग्ध प्रचुरता का धन्यवाद	मक्खन-पनीर अर्पण, रात भर चलने वाला अलाव नृत्य
चोइम्स ***(Choimus)***	दिसंबर के मध्य ***(7–22 दिसंबर)***	शीतकालीन संक्रांति, नया साल, शुद्धिकरण	आटे की मूर्तियाँ, बलुमैन पूजन, विशाल अलाव नृत्य

डिजिटल अभिलेख एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री

कलाशा लोक नृत्य, उनकी अद्वितीय संगीत परंपराओं और यूनेस्को सूचीबद्ध खगोलीय विरासत के प्रामाणिक अध्ययन हेतु विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सांस्कृतिक निकायों द्वारा दृश्य-श्रव्य सामग्री का दस्तावेजीकरण किया गया है।

यूनेस्को *(UNESCO)* के डिजिटल अभिलेखागार पर कलाशा समुदाय की 'सूर्यी जागेक' प्रणाली और उससे जुड़े अनुष्ठानिक नृत्यों का आधिकारिक *10*-मिनट का वीडियो वृत्तचित्र उपलब्ध है, जिसे ***UNESCO Suri Jagek Official Document (Nomination No. 01381)*** पर देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तान के राष्ट्रीय लोक विरसा संग्रहालय *(Lok Virsa Museum, Islamabad)* के अभिलेखागार में कलाशा समुदाय के पारंपरिक ढोल संगीत, तिमकी ताल, 'मादमी' अंत्येष्टि नृत्य और चिलम जोशी के दौरान गाए जाने वाले लोक गीतों का विस्तृत ऑडियो-वीडियो संग्रह संरक्षित है। विभिन्न एथ्नोग्राफिक मीडिया स्रोतों में कलाशा महिलाओं के वृत्ताकार घेरा नृत्य *(Circle Dance)* और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की लयबद्ध ध्वनियों का प्रत्यक्ष दस्तावेजीकरण उपलब्ध है।

भावी दृष्टिकोण एवं निष्कर्ष

कलाशा समुदाय का गहन नृवंशविज्ञान अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वे सिकंदर महान की सेना के यूरोपीय अवशेष न होकर, प्राचीन हिंद-आर्य *(Indo-Aryan)* परंपरा के स्थानीय स्वदेशी निवासी हैं। उनकी धार्मिक प्रणाली, जो 'ओन्जेस्ता' *(*पवित्र*)* और 'प्रगाता' *(*अशुद्ध*)* के कठोर स्थानिक द्वैतवाद पर निर्मित है, प्रागैतिहासिक वैदिक और प्रोटो-हिंद-ईरानी संस्कृति का प्रत्यक्ष निरूपण करती है।

हालाँकि, *21*वीं सदी में यह अनूठी संस्कृति कई गंभीर खतरों का सामना कर रही है।

पड़ोस की आबादियों द्वारा बढ़ते सामाजिक-धार्मिक दबाव और धर्म परिवर्तन के मामलों के कारण कलाशा जनसंख्या का प्रतिशत घट रहा है। बम्बुरेत घाटी में अनियंत्रित और अव्यवस्थित पर्यटन से कलाशा त्योहारों और जस्ताखान जैसे पवित्र स्थलों की सांस्कृतिक अखंडता प्रभावित हो रही है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न में आ रहे अनिश्चित बदलावों से 'सूर्यी जागेक' जैसी पारंपरिक खगोलीय प्रणाली की भविष्यवाणियों और कृषि चक्र पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

कलाशा भाषा, लोक नृत्य और अमूर्त विरासत के स्थायी संरक्षण के लिए आवश्यक है कि केवल बाह्य पर्यटन को बढ़ावा देने के स्थान पर समुदाय-केंद्रित संरक्षण नीतियाँ बनाई जाएँ। बाशाली और जस्ताखान जैसे पारंपरिक स्थलों की स्वायत्तता की सुरक्षा, और यूनेस्को द्वारा अनुशंसित दिशा-निर्देशों के अनुरूप स्थानीय युवाओं को उनकी प्राचीन खगोलीय व अनुष्ठानिक परंपराओं का हस्तांतरण सुनिश्चित करना इस प्राचीन हिंदूकुश सभ्यता को जीवित रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

Works cited

1. Kalash people - Wikipedia, *https://en.wikipedia.org/wiki/Kalash_people*

2. Kalash Valley Travel Guide | Bumburet, Rumbur, Birir and Private, *https://sylanaadventures.com/destinations/kalash-valley/*

3. Kalasha Valleys - Wikipedia, *https://en.wikipedia.org/wiki/Kalasha_Valleys*

4. Kalash Valleys: Bumburet, Rumbur and Birir - Janson Explorers, *https://jansonexplorers.com/kalash-valleys/*

5. Kalash Valley Festivals & Chitral Tour Guide (2026-2027) - Elham Asia, *https://elhamasia.com/blog/kalash-valley-festivals-chitral-guide*

6. Kalash Valley Tour – 7 Days of Culture & Adventure in Chitral, *https://www.incrediblepakistan.com/trips/kalash-valley-tour/*

7. Kalasha Valleys - Visit Chitral Valley, *https://visitchitralvalley.com/kalasha-valleys/*

8. Are the Kalash people, after all, descendants of Alexander the Great?, *https://www.greecehighdefinition.com/blog/are-kalash-people-descendants-of-alexander-the-great*

9. The Kalash of Pakistan: Indo-European Relics, or a Myth?, *https://www.exploreyourdna.com/article/157/the-kalash-of-pakistan-indo-european-relics-or-a-myth*

10. In search of the origins of Kalash - COGNIARCHAE, *https://cogniarchae.com/2016/07/27/in-search-of-the-origins-of-kalash/*

11. The Kalasha Pantheon - IUB Journals, *https://journals.iub.edu.pk/index.php/sjps/article/download/3624/1886/12772*

12. What is the Kalash people's connection to Indo-European ... - Quora, *https://www.quora.com/What-is-the-Kalash-peoples-connection-to-Indo-European-peoples-and-Aryans*

13. Kalasha Language: Indo-Aryan and Greek Roots | PDF - Scribd, *https://www.scribd.com/document/236805119/A-Morphophonological-Description-of-Kalasha-as-an-Indo-Aryan-Language-With-Greek-Roots*

14. The Kalash People & Ancient Shambhala - Okar Research, *http://balkhandshambhala.blogspot.com/2012/11/balkh-and-kalash.html*

15. Kalash Religion: Gods, Festivals and Beliefs | Nuristani, *https://nuristani.com/kalash-religion/*

16. Kalasha religion - Encyclopaedia Indica, *https://indicaonline.miraheze.org/wiki/Kalasha_religion*

17. (PDF) The Kalasha Pantheon: Unveiling the Spiritual Heritage of an, *https://www.researchgate.net/publication/389907022_The_Kalasha_Pantheon_Unveiling_the_Spiritual_Heritage_of_an_Ancient_People*

18. Socio-Cultural Life of the Kalasha People of Chitral: A Study of their,

http://www.mahraka.com/kashif/kashifAli_kalash.pdf

19. A Historical Narrative of the Bashali: The Menstrual House as,
https://prdb.pk/article/a-historical-narrative-of-the-bashali-the-menstrual-house-a-6776

20. Bashali: Cultural Identity of Kalasha Women | PDF - Scribd,
https://www.scribd.com/document/653866278/A-Historical-Narrative-of-the-Bashali-The-Menstrual-House-as-Cultural-Identity-of-the-Kalasha-Women-of-the-Hindu-Kush-Chitral-Pakistan

21. Video: Suri Jagek (observing the sun), traditional meteorological,
https://ich.unesco.org/en/video/44839

22. Suri Jagek (observing the sun), traditional meteorological and,
https://ich.unesco.org/en/USL/suri-jagek-observing-the-sun-traditional-meteorological-and-astronomical-practice-based-on-the-observation-of-the-sun-moon-and-stars-in-reference-to-the-local-topography-01381

23. Suri Jagek, traditional meteorological and astronomical practice,
https://www.youtube.com/watch?v=FuFeJHjztQc

24. ichLinks Video Competition: Capturing the Intangible Cultural Heritage,
https://www.unesco.org/en/articles/ichlinks-video-competition-capturing-intangible-cultural-heritage

25. Kalash Valleys Traditional Dance and Music: An Amazing Showcase,
https://www.youtube.com/watch?v=I5V1SJ3c2AU

26. Folk Dances from Madya Pradesh - Indian Dance School,
https://www.gaurijog.com/indian-dance-education/indian-folk-dances/folk-dances-from-madya-pradesh

27. Lok Virsa Museum - Wikipedia, *https://en.wikipedia.org/wiki/Lok_Virsa_Museum*